STD= VII
HINDI-II
Lc := 01

अब जागो जीवन के प्रभात

अब जागो ..... के प्रभात !

शब्दार्थ :-
प्रभात = सवेरा, वसुधा = पृथ्वी, हिम-कन = बर्फ के कण, ओस, क्षोभ = दुख
अरुणागात = लालिमायुक्त शरीर वाली ।

व्याख्या :-
कवि नवजीवन के प्रभात में जागने का आवाहन करता है। इस प्रातः काल में ओस और बर्फ रुपी दुख के जो कारण दिखाई देते थे, वे समाप्त हो गए है। लालिमायुक्त शरीर वाली उषा प्रकट हो चुकी है। अतः प्रभात में जाग उठो, इस नवजीवन में सक्रिय हो जाओ।

तम-नयनों ..... के प्रभात !

व्याख्या :-
रात्रि के तारे, आँखों की अन्धकार विलुप्त होकर प्रकाश की किरणों के समूह में मुँद गए हैं और प्रातः की शीतल, मन्द और सुगन्ध वाली मलय समीर चल रही है। इस प्रभात बेला में जाग उठो और नवजीवन में सक्रिय हो जाओ।

रजनी की ..... के प्रभात

व्याख्या :-
प्रभात होने से रात्रिकालीन साज-सज्जा (अन्धकार) की कालावधि बीत गई है। प्रातः पक्षियों का जो मधुर कलरव (गान) हो रहा है, उससे उठकर (जागकर) मिलो, उसका अभिनन्दन करो। पूर्व दिशा से जागृति की हवा चलने लगी है। अतः इस प्रातः काल की बेला में जाग जाओ। नवजीवन में सक्रिय हो जाओ।

HOME WORK: (i) अभ्यास में दिए गए कठिन शब्दों को याद करके लिखने का अभ्यास करें
(ii) पुस्तक के आधार पर लघु व दीर्घ प्रश्नों का उत्तर लिखें
(iii) व्याकरण व भाषा कौशल का अभ्यास करें

Scanned with CamScanner